यह चलनी वास्तव में अजीब है!

कल्पना कीजिए:
एक आदमी भयंकर मोटरसाइकिल दुर्घटना में घायल हो जाता है। उसका पैर कट जाता है और वह बहुत खून बहा रहा है। वह जमीन पर पड़ा है और तुरंत मदद का जरूरतमंद है। सौभाग्य से, एक नेक samaritan वहाँ आता है और मदद करना चाहता है। लेकिन वह आदमी की गंभीर चोट की बजाय उसके चेहरे पर एक छोटे पिंपल को देखकर उसे फोड़ देता है।

फिर वह कहता है, “देखो! मैंने तुम्हारी मदद की। अगर तुम मुझे जैसे शांत और सावधान व्यक्ति नहीं पाते, तो यह पिंपल और बिगड़ सकता था।”
और फिर वह चला जाता है, कहते हुए, “मैं कल तुम्हारी प्रगति देखने वापस आऊंगा।”

अब सोचिए, क्या उस आदमी ने वास्तव में घायल व्यक्ति की मदद की? तकनीकी रूप से हाँ, उसने कुछ मदद की। लेकिन यह वह मदद नहीं थी जिसकी उस समय ज़रूरत थी। घायल आदमी को जीवन रक्षक सहायता चाहिए थी, न कि एक सौंदर्य समाधान।

यीशु ने धार्मिक नेताओं की समान पाखंड को फटकारा
यीशु ने अपने समय के धार्मिक नेताओं में इसी प्रकार का पाखंड देखा। मत्ती 23:23–24 में उन्होंने कहा:

“ऐ लेखपालों और फरीसियों, पाखंडी लोगों! क्योंकि तुम
पुदीना, धनिया और जीरा का दसवां हिस्सा देते हो और धर्म के महत्वपूर्ण मामलों—न्याय, दया और विश्वास—को छोड़ देते
हो। यह तुमको करना चाहिए था, दूसरों को छोड़ते हुए नहीं।
हे अंधे मार्गदर्शक! तुम एक मच्छर को छानते हो और एक ऊँट को निगल जाते हो!” (मत्ती 23:23–24)

इन नेताओं ने परमेश्वर की प्राथमिकताओं को उल्टा कर दिया। वे जड़ी-बूटियों और मसालों का दसवां हिस्सा देने में ध्यान केंद्रित करते थे, लेकिन न्याय, दया और विश्वास जैसे परमेश्वर के मूल सिद्धांतों की अनदेखी करते थे।

उन्होंने पूजा को व्यवसाय में बदल दिया
समान नेता दान और मंदिर कर पर इतना जोर देते थे कि उन्होंने परमेश्वर के घर को बाज़ार में बदल दिया (यूहन्ना 2:14–16)। जब तक लोग पैसा, बलिदान और दसवां हिस्सा लाते रहे, उन्होंने पाप, अन्याय और भ्रष्टाचार की अनदेखी की।

अगर कोई दसवां नहीं देता था, तो उसे बुलाया जाता, फटकारा जाता और “परमेश्वर को लूटने” का आरोप लगाया जाता था (मलाकी 3:8)। फिर भी पाप में जीने वालों को छोड़ दिया जाता। परिणामस्वरूप, बाहर से धार्मिक लेकिन अंदर से आध्यात्मिक रूप से दिवालिया पीढ़ी बन गई।

आज भी यह अजीब फ़िल्टर मौजूद है
यदि आधुनिक उपदेश केवल निम्नलिखित पर केंद्रित हैं:

दान

सफलता

समृद्धि

वित्तीय साझेदारी

लेकिन इन चीज़ों की अनदेखी करते हैं:

पश्चाताप

बपतिस्मा

नए आकाश और नई पृथ्वी

परमेश्वर और दूसरों के प्रति प्रेम

पवित्र आत्मा का कार्य

तो हम भी वही अजीब फ़िल्टर इस्तेमाल कर रहे हैं।

यीशु ने कहा कि सबसे महान आज्ञा है:

“तुम अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी
आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करो।
यह महान और पहली आज्ञा है। और दूसरी इसके समान है:
तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।” (मत्ती 22:37–39)

यदि परमेश्वर और दूसरों के लिए प्रेम की शिक्षा शायद ही दी जाती हो, लेकिन धन और आशीष पर बार-बार जोर दिया जाता हो, तो उपदेशक और श्रोता दोनों आध्यात्मिक रूप से भटक रहे हैं।

वास्तविक मदद या गलत जगह की मदद?
मान लीजिए: आप छह दिन तक भूखे हैं और किसी ने आपको भोजन के बजाय एक सुंदर सूट दे दिया। यह एक सुंदर उपहार है, लेकिन उस समय पूरी तरह बेकार है। आपको भोजन की जरूरत है, फैशन की नहीं।

आध्यात्मिक रूप में भी ऐसा ही है। यदि आपका आत्मा पोषण नहीं पा रहा है, यदि आपका परमेश्वर के साथ संबंध ठंडा हो रहा है, तो आपको वहीं रहने की जरूरत नहीं है। उस स्थान की तलाश करें जहाँ आपको

आध्यात्मिक पोषण मिलेगा। यह पाप नहीं है। यीशु ने आपको किसी संप्रदाय के लिए नहीं बुलाया।

“परमेश्वर का राज्य और उसकी धार्मिकता पहले खोजो, और ये सब चीज़ें तुम्हें दी जाएँगी।” (मत्ती 6:33)

समृद्धि पाप नहीं है, लेकिन यह गौण है। पहली प्राथमिकता परमेश्वर का राज्य और उसकी धार्मिकता है।

क्या आप वास्तव में उद्धार पाए हैं?
ये अंतिम दिन हैं। खुद से पूछें:

क्या मैं उद्धार पाया हूँ?

क्या मैंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है?

बाइबिल चेतावनी देती है:

“जो कोई मसीह की आत्मा नहीं रखता वह उसका नहीं है।” (रोमियों 8:9)

यदि आप आज परमेश्वर से दूर हैं, तो पश्चाताप करें। यीशु मसीह के नाम पर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें, और पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करें (प्रेरितों के काम 2:38)।

पवित्र आत्मा आपको:

मार्गदर्शन देगा

सिखाएगा

शक्ति देगा

आपको शाश्वत रूप से मोहर देगा (इफिसियों 1:13)

जैसे किसी पत्र पर मोहर लगाई जाती है, आप परमेश्वर के लिए तैयार चिह्नित होंगे।

परमेश्वर आपको यीशु मसीह के नाम में आशीर्वाद दें।

Share on:
WhatsApp